कैम्पस कनेक्ट

(सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु का समाचार बुलेटिन)

अक्टूबर, २०२५ वर्ष : १, अंक : ३

प्रेरणा-स्रोत :

श्रीमती आनन्दीबेन पटेल
माननीया कुलाधिपति एवं
श्री राज्यपाल, उ. प्र.

श्री योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमन्त्री, उ. प्र.

संरक्षक :
प्रो. कविता शाह
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय

परामर्श-मण्डल :
प्रो. दीपक बाबू
प्रो. सौरभ
प्रो. प्रकृति राय
प्रो. नीता यादव
श्री दीनानाथ यादव (कुलसचिव)

सम्पादक :
प्रो. हरीशकुमार शर्मा

सह-सम्पादक :
डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सम्पादक-मण्डल :
डॉ. शिवम शुक्ल
डॉ. रेनू त्रिपाठी
डॉ. अनुज कुमार
डॉ. सत्यम् मिश्र

वित्त-प्रबन्धन :
श्री रमेन्द्र कुमार मौर्य (वित्ताधिकारी)

तकनीकी सहयोग एव डिजाइनिंग :
श्री दिव्यांशु कुमार

स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक :
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश-२७२२०२
ईमेल : campus.connect@suksn.edu.in
वेबसाइट : www.suksn.edu.in

(सम्पादन-प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यावसायिक)

नोट : रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कुलपति-कथन

अक्टूबर माह राष्ट्रीय-सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस माह हम नवरात्र से आरम्भ कर दशहरा और फिर दीपावली जैसे बड़े त्योहार मना रहे हैं। नवरात्र में हम शक्ति-साधना करते हैं, फिर उसके तुरन्त बाद दशहरा में रावण को मारते हैं, जलाते हैं। रावण को मारने के लिये शक्ति चाहिए। फिर यह रावण चाहे हमारे भीतर का हो, चाहे बाहर का। शक्ति हमें माँ से मिलती है, जिनकी नवरात्र में हम आराधना करते हैं। रावण अहं का प्रतीक है और माँ आस्था का। बिना आस्था के अहं विगलित नहीं होता। रावण परम ज्ञानी था, महान योद्धा और समर्थ शासक भी। पर, उसमें एक ही कमी थी, जो उसको उसके विनाश की ओर ले गयी। वह कमी थी उसका अहं। अहं हमें अन्धा कर देता है। उस अवस्था में न तो हम दूसरे की महत्ता को समझ पाते हैं, न उसकी शक्ति को पहचान पाते हैं। अपनी बुराइयों को भी नहीं देख पाते। आस्था हमें इस स्थिति से बचाती है। आस्था भक्ति को साथ लेकर चलती है। भक्ति के तेल से भरे आस्था के दीपक की विश्वासमयी लौ हमारे अन्तर में चारित्रिक उजास भरती है, जो हमें विचलन से बचाती है। भटकाव से दूर रखती है, अँधेरे रास्ते पर चलने से रोकती है। यह एक क्रम है। आस्था और भक्ति, फिर अहं से मुक्ति और परिणामस्वरूप विश्वास के दीपक का निर्मल प्रकाश- जो हमें नवरात्र से लेकर दीपावली तक देखने को मिलता है।

दीपावली पाँच उत्सवों का समन्वित रूप है- दो पर्व धनतेरस एवं छोटी दीवाली पहले और फिर गोवर्द्धन-पूजा तथा भाई-दूज बाद में। हालांकि धनतेरस का सम्बन्ध भैषजशास्त्र के महान ज्ञाता भगवान धन्वन्तरि से है, परन्तु अब जब यह धन की साधना से जुड़ गया है तो जुड़ गया है। धनतेरस पर लक्ष्मी-गणेश की विशेष पूजा होती है, जिनका सम्बन्ध सुख-समृद्धि से है। सुख-समृद्धि हमारे मन को उजियार से भरकर उसे बाहर प्रकट करने हेतु दीप वालने को प्रेरित करती है और जब हम स्वयं समृद्ध हो जाते हैं, अपना घर प्रकाशित कर लेते हैं तो हमारी अन्तःप्रेरणा हमें इस उजाले को चतुर्दिक फैलाने को प्रेरित करती है। इसलिये छोटी दीवाली पर हम एक दीप जलाते हैं और दीवाली पर हम बहुत सारे दिये जलाते हैं। इन दीपों को हम घर के भीतर ही नहीं रखते, घर के बाहर भी रखते हैं। देवस्थानों, चौराहों आदि पर भी रखते हैं। यही हमारी संस्कृति है, नैतिकता है, परम्परा है, मूल्य-बोध है कि अपना घर रोशन कर लेने के बाद उस रोशनी को कैद करके न रखें, दूसरों तक भी उसे पहुँचने दें, बल्कि स्वयं पहुँचायें। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का भाव लिये हमारी सनातन परम्परा दीपावली पर हमें हर बार यही बोध देती है।

जैसा कि हम सब जानते ही हैं कि दीपावली के बाद गोवर्द्धन-पूजा का त्योहार आता है जिसका सम्बन्ध भगवान कृष्ण, देवराज इन्द्र, गोवर्द्धन पर्वत तथा ब्रजवासियों से है। गोवर्द्धन-पूजा हमारे भीतर के कृतज्ञ-भाव की अभिव्यक्ति है, जो हमें भगवान कृष्ण ने सिखाया। पाँचवाँ त्योहार भाई-दूज पारिवारिक स्नेह-सूत्र को मजबूत करने की कड़ी है। इस माह गांधी-शास्त्री जयन्ती भी है, जो हमारे राष्ट्रीय उत्सव के रूप में हम मनाते हैं। इस अवसर पर देश के इन दोनों महान सपूतों को सादर नमन।

हम अपना पाँच दिवसीय वार्षिकोत्सव भी इसी महीने मनाने जा रहे हैं, उसके लिये भी सभी को बधाई और शुभकामनाएँ। आशा है विश्वविद्यालय परिवार इसे सृजन और आनन्द के उत्सव के रूप में मनाकर सफल-सार्थक करेगा।

-कविता शाह

विश्वविद्यालय कुलगीत

आत्मदीप प्रकाश पावन परम विद्या धाम।
विश्वविद्यालय यही सिद्धार्थ जिसका नाम।
बुद्ध की करुणा अहिंसा प्रेम का उपहार,
उमड़ता रहता अहर्निश शान्ति-पारावार,
ज्ञान का आलोक मानव का परम सन्देश,
नित्य प्रज्ञा प्रीति गुरुओं का नवल निवेश।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

परम पावन परम निर्मल पुण्य भूमि प्रकाश,
ज्ञान का आनन्द का आलोक का आकाश,
महा करुणा से अलंकृत कपिलवस्तु महान,
अमरता की चिर तृषा का लोक मंगल गान।
आत्मदीप प्रकाश पावन...

नमन इसको इस धरा को कोटि कोटि प्रणाम,
यह नहीं बस एक संस्था तीर्थ अमृत धाम,
महाप्रज्ञा महाकरुणा शान्ति का सन्देश,
विश्वगुरु का यह तपोमय ज्ञान का परिवेश।

आत्मदीप प्रकाश पावन परम विद्या धाम
विश्वविद्यालय यही सिद्धार्थ जिसका नाम।

दिवाली शुभ हो

दिवाली शुभ हो, शुभ हो, शुभ हो!
पंचोत्सव का महापर्व यह,
सबको मंगलमय हो!

दीप जलें मन में नित उज्ज्वल आशा के,
शब्द सजें उर में मृदु शुभतर भाषा के।
अशुभ-अमंगल से, जीवन निर्भय हो!

सुख, समृद्धि, सफलता नाचे आँगन में,
रोग, शोक, भय, क्षोभ न व्यापें तन-मन में।
जग-जीवन में सतत आपकी जय हो!

लक्ष्मी-गणेश की कृपा प्राप्त होवे सबको,
ऋद्धि-सिद्धि-सामर्थ्य प्राप्त होवे सबको।
जीवन का पल-पल सबका सुखमय हो!
दिवाली शुभ हो, शुभ हो, शुभ हो!

नमन

है नमन, हे नमन! वीर तुमको नमन!
मानवर्द्धक, प्रदर्शक-दिशा देश के-
राष्ट्र सेवाव्रती आज तुमको नमन!
विश्वमोहन तुम्हें याद करता जगत,
तुम करमचन्द, इसमें न कोई द्विमत।
सत्य की साधना, राष्ट्र-आराधना-
यही जीवन को अपने बनाया मिशन!
लाल जन्मे बहादुर इसी देश में,
मूर्ति दृढ़ता की थे जो सहज वेश में।
मूल्य-मानक, प्रशासक परम तेजोमय-
करते अर्पित उन्हें हम सब श्रद्धा-सुमन!
आज दिन याद करने का बापू तुम्हें,
याद करते उन्हें, कहते शास्त्री जिन्हें।
पर रखें याद कर्तव्य-पथ हम सदा,
तभी सार्थक होगा हमारा नमन!

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में उद्यमिता विकास पर ऐतिहासिक गोलमेज बैठक

२७ सितम्बर को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में कुलपति प्रो. कविता शाह के नेतृत्व में "उद्यमिता विकास एवं जिले की सर्वांगीण प्रगति" पर एक ऐतिहासिक गोलमेज बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय और जिला प्रशासन के बीच महत्वपूर्ण समझौता-ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए, जो जिले के आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक विकास की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. शाह ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने सामाजिक दायित्वों को समझते हुए शिक्षा, शोध और कौशल विकास के माध्यम से जनपद की आकांक्षाओं को नई उड़ान देगा। जिलाधिकारी डॉ. राजागणपति आर. ने इसे आकांक्षी जनपद से विकसित जनपद की दिशा में बढ़ने का ठोस कदम बताया और काला नमक चावल की वैश्विक पहचान, बीज गुणवत्ता परीक्षण केंद्र तथा वेयरहाउस स्थापना जैसे प्रयासों की जानकारी दी। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. सौरभ ने कहा कि

यह पहल विद्यार्थियों को "वोकल फॉर लोकल" के माध्यम से आत्मनिर्भरता की राह पर अग्रसर करेगी।

इस अवसर पर कुलसचिव दीना नाथ यादव, सीडीओ बलराम सिंह, कृषि अधिकारी मोहम्मद मुजमिहिल, प्रो. नीता यादव, प्रो. प्रकृति राय सहित अनेक शिक्षक, अधिकारी और उद्यमी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिवम शुक्ला ने किया।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

दिनांक २५ सितम्बर को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु में पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ द्वारा "पं. दीनदयाल उपाध्याय का समग्र चिंतन" विषयक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय जैसी अवधारणाएं देने वाले विशिष्ट चिन्तक और राजनेता पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त (पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान) और विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. हरीशकुमार शर्मा उपस्थित रहे।

प्रो. गुप्त ने उपाध्याय जी के एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की अवधारणा को भारतीय चिंतन की मौलिक देन बताया। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. कविता शाह ने कहा कि पं. उपाध्याय का दर्शन भारतीय संस्कृति पर आधारित विकास की दिशा दिखाता है।

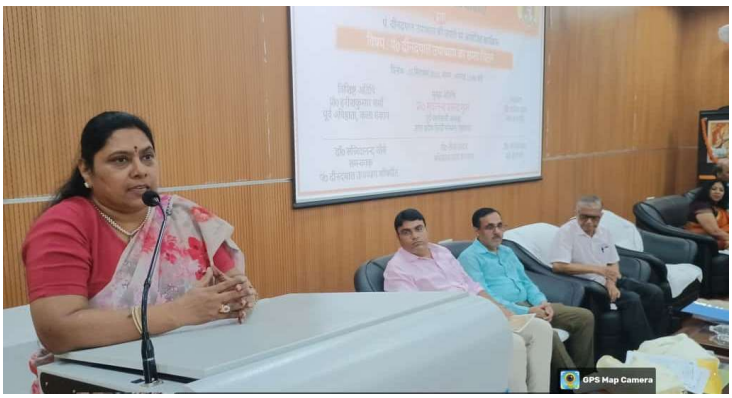

प्रो. नीता यादव ने पं. उपाध्याय के जीवन को सामाजिक समरसता और राष्ट्र निर्माण का आदर्श बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जय सिंह यादव और संयोजन डॉ. सच्चिदानंद चौबे ने किया। इस अवसर पर प्रो. दीपक बाबू, प्रो. सौरभ, डॉ. अखिलेश दीक्षित तथा बड़ी संख्या में शिक्षक एवं छात्र उपस्थित रहे।

केंद्रीय उपकरण प्रयोगशाला का शुभारम्भ

१ सितंबर को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के विज्ञान संकाय में स्थापित केंद्रीय उपकरण प्रयोगशाला का शुभारम्भ कुलपति प्रो. कविता शाह के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो. शाह ने कहा कि यह प्रयोगशाला विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी संसाधन सिद्ध होगी। यहाँ उपलब्ध आधुनिक उपकरण वैज्ञानिक अनुसंधान और उच्च स्तरीय परियोजनाओं को नई दिशा प्रदान करेंगे।

विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो. प्रकृति राय ने विश्वास व्यक्त किया कि यह प्रयोगशाला विद्यार्थियों को शोध एवं नवाचार की ओर प्रेरित करेगी और विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों में वृद्धि करेगी।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय में 'समर्थ उत्तर प्रदेश विकसित उत्तर प्रदेश' के अंतर्गत जनपदीय संगोष्ठी आयोजित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, में कुलपति प्रो. कविता शाह के मार्गदर्शन में जिला प्रशासन सिद्धार्थनगर के सहयोग से "समर्थ उत्तर प्रदेश–विकसित उत्तर प्रदेश/2047" अभियान के अंतर्गत दिनांक 13 सितंबर 2025 को एक जनपदीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में पूर्व डीजीपी यशपाल सिंह ने कहा कि भारत के विकास का मार्ग उत्तर प्रदेश से होकर जाता है और राष्ट्र के उत्तम चरित्र–निर्माण में शिक्षकों और युवाओं की भूमिका सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने युवाओं से शिक्षा और नेतृत्व दोनों क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देने का आह्वान किया।

दिग्विजयनाथ पी. जी. कॉलेज, गोरखपुर के पूर्व प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार की अभिनव सोच और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी ही विकसित उत्तर प्रदेश 2047 की आधारशिला है। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि वे नीति–निर्माण और क्रियान्वयन दोनों में सहभागी बनें, क्योंकि आपका प्रत्येक विचार विकसित उत्तर प्रदेश की दिशा में एक कदम है।

जिलाधिकारी डॉ. राजा गणपति आर ने जिले के समग्र विकास पर अपने विचार रखते हुए कहा कि स्थानीय संसाधन ही हमारी सबसे बड़ी पूँजी हैं। उन्होंने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में मखाना उत्पादन, मत्स्य पालन और पर्यटन को प्रोत्साहित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय जिले की एक महत्त्वपूर्ण परिसंपत्ति है, जो शैक्षणिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर निरंतर योगदान दे रहा है।

राजस्व परिषद सदस्य एस. बी. एस. रंगाराव ने कहा कि राजस्व परिषद ग्राम से राज्य स्तर तक विकास योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में सेतु की भूमिका निभा रही है, जिससे उत्तर प्रदेश को आत्मनिर्भर और विकसित राज्य बनाने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. नीता यादव ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने छात्रों के माध्यम से समाज से जुड़कर विकसित भारत /2047 के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्यरत है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा संचालित आउटरीच कार्यक्रमों की जानकारी दी।

मुख्य नियंता प्रो. दीपक बाबू ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान और सामाजिक सरोकारों को साथ लेकर चलने के लिए सतत प्रयासरत है। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. सौरभ (निदेशक, आइक्यूएसी) तथा संचालन डॉ. शिवम शुक्ला ने किया। संगोष्ठी में जिले के शिक्षकों व विद्यार्थियों की बड़ी संख्या में सक्रिय भागीदारी रही।

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने क्षय रोगियों के लिए बढ़ाया करुणा का हाथ

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में 17 सितंबर को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 75वें जन्मदिवस के अवसर पर कुलपति प्रो. कविता शाह के निर्देशन में सामाजिक दायित्व बोध के अंतर्गत क्षयरोगियों हेतु आहार पोटली वितरण एवं स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन गौतम बुद्ध

प्रेक्षागृह में किया गया। 'सेवा ही संकल्प' की भावना को साकार करता यह आयोजन विश्वविद्यालय की समाजोन्मुखी दृष्टि और सेवा–भावना का सशक्त उदाहरण रहा।

विदित है कि विश्वविद्यालय ने सिद्धार्थनगर जनपद के 100 क्षयरोगियों को अपने शिक्षकों के माध्यम से गोद लिया है और क्षयमुक्त भारत अभियान में सक्रिय सहयोगी की भूमिका निभा रहा है।

इस अवसर पर प्रो. नीता यादव (अधिष्ठाता, छात्र कल्याण) ने कहा कि सिद्धार्थ विश्वविद्यालय शिक्षा और शोध के साथ–साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन के लिए भी प्रतिबद्ध है। प्रो. प्रकृति राय (अधिष्ठाता, विज्ञान संकाय) ने संतुलित आहार, स्वच्छता और निरंतर उपचार को क्षयरोग से मुक्ति का प्रमुख उपाय बताया। प्रो. सौरभ (निदेशक, आईक्यूएसी एवं अधिष्ठाता, वाणिज्य संकाय) ने कहा कि सेवा की भावना भारतीय परंपरा का मूल है और स्वस्थ समाज ही स्वस्थ राष्ट्र का आधार होता है।

कार्यक्रम में कुलसचिव श्री दीना नाथ यादव एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. शैलेंद्र प्रताप सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सरिता सिंह एवं डॉ. मयंक कुशवाहा ने किया तथा संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह द्वारा किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के आचार्यगण, कर्मचारी, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्रा उपस्थित रहे।

डॉ. लक्ष्मण सिंह की अंतरराष्ट्रीय पुस्तक प्रकाशित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के रसायनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. लक्ष्मण सिंह की अंतरराष्ट्रीय पुस्तक 'Emerging Materials for Photodegradation and Environmental Remediation of Micro and Nano Plastics' लंदन की ISTE Ltd. और John Wiley & Sons, New York (USA) द्वारा प्रकाशित की गई है।

कुलपति प्रो. कविता शाह ने डॉ. सिंह को बधाई देते हुए कहा कि माइक्रो और नैनो प्लास्टिक आज पर्यावरणीय स्थिरता के लिए गंभीर चुनौती हैं, और यह पुस्तक उनके प्रभावी निवारण हेतु एक उपयोगी योगदान सिद्ध होगी। डॉ. सिंह ने बताया कि पुस्तक में माइक्रो एवं नैनो प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने के लिए कार्यात्मक सामग्रियों, नैनो सामग्रियों और हरित तकनीकों के अनुप्रयोग पर विस्तृत शोध प्रस्तुत किया गया है।

इस शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रो. प्रकृति राय (अधिष्ठाता, विज्ञान संकाय), प्रो. सौरभ (निदेशक, आईक्यूएसी) तथा प्रो. एस.के. श्रीवास्तव ने डॉ. सिंह को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

सम्पादकीय

धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजा।
यस्याद्धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः।।
आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मोहि तेषां अधिकोविशेषो धर्मेणहीनाः पशुभि समानाः।।

'महाभारत' के उपर्युक्त श्लोक में कहा गया है कि धारण किया जाने वाला होने के कारण इसकी संज्ञा धर्म है। धर्म प्रजा को धारण करता है। अतः जो धारण करने से जुड़ा है, वह निश्चय ही धर्म है। आहार, निद्रा, भय और मैथुन मनुष्य और पशु दोनों ही की स्वाभाविक आवयकताएं हैं। केवल धर्म ही मनुष्य में विशेष रूप से अधिक है जो उसे पशुओं से श्रेष्ठ बनाता है। अतः धर्महीन मनुष्य पशु के समान होता है।

यह महिमा है मनुष्य के जीवन में धर्म की। अब प्रश्न उठता है कि यह धर्म क्या है? यह कैसे मनुष्य तथा समाज को धारण करता है? तो इसका एक बहुत सीधा सा उत्तर है- व्यवस्था। मानव ने एक व्यवस्था बनाकर अपने को 'सामाजिक प्राणी' बनाया। इस व्यवस्था में कुछ नियम निर्धारित होते हैं उनका पालन करना ही मानव का धर्म है। जब हममें से कोई इन नियमों को नहीं मानता तो वह उस व्यवस्था को भंग करता है, जिसका दुष्परिणाम बहुतों को भुगतना पड़ता है। पशुओं में यह व्यवस्था नहीं होती। इसलिये मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा-

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप ही आप चरे।
मनुष्य है वही कि जो मनुष्य के लिये मरे।

मनुष्य मात्र अपने लिये नहीं जी सकता। यदि वह अपने लिये ही जिया होता तो विकास के इन सोपानों तक नहीं पहुँचा होता। यही उसकी शक्ति है और यही सौन्दर्य भी। समाज का तो निर्माण ही मानव ने पारस्परिक सहयोग के लिये किया है। इसके लिये उसने कुछ मूल्यों, आदर्शों, सिद्धान्तों, नियमों आदि का निर्माण किया तथा सामूहिक रूप से सुचारु ढँग से जीवन जीने के लिये एक व्यवस्था के रूप में अपने लिये स्वीकार किया। उनको अपनाना और पालन करना हमारा धर्म ही होता है। अपने से बड़े-छोटों के प्रति यथोचित व्यवहार करना, समाज-राष्ट्र के हित में काम करना, सदाचरण एवं सच्चरित्रता के साथ जीवनयापन करना, यथावसर दूसरों की सहायता करना, समाज-राष्ट्र द्वारा प्रदत्त अपने अधिकारों का सदुपयोग तथा कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन इत्यादि से सम्बन्धित ही वे अनेकानेक नियम, नीतियाँ तथा निर्देश आदि हैं, जिनका पालन करना ही धर्म-पथ पर चलना कहलाता है। एक तरह से यह हमारे लिये निर्धारित कर्तव्य-कर्म हैं, जिनको पूरा करना धर्म-पालन के ही रूप में मान्य है। पिता-धर्म, पुत्र-धर्म, पत्नी-धर्म, पति-धर्म, सेवा-धर्म, राष्ट्रधर्म आदि का सम्बन्ध हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्तव्यों के पालन से ही जुड़ा है।

लेकिन धर्म के बारे में जो आम धारणा है, वह पूजा-उपासना की पद्धतियों से जुड़ी है। हमारी उपासना-पद्धति भी धर्म के अन्तर्गत आती है, पर मात्र वही धर्म नहीं है। वह उसका एक आयाम है। आधार भी कह सकते हैं उसे; क्योंकि हमारी व्यवस्था के नियमन में उसकी एक प्रमुख भूमिका होती है। किसी भी धर्म को देखें तो उपासना-पद्धति के साथ जो मुख्य बातें उसमें होंगी, वे होंगे धर्म-प्रवर्तक द्वारा दिये गये उपदेश, शिक्षाएं आदि जो व्यवस्था (धर्म) के रूप में सम्बन्धित समाज द्वारा स्वीकार कर ली जाती है और जिनके पालन पर जोर दिया जाता है। इसलिये कह सकते हैं कि मानवीय गुण, मानवीय कर्तव्य, मानवीय मूल्य- इन तीनों की त्रिवेणी के संगम से व्यक्ति के भीतर धर्म का प्रयागराज बनता है, जो उसके सम्पर्क में आये लोगों को सुखद अनुभूति कराता है।

भारत में धर्म एक बड़ी व्यापक अवधारणा है। इसीलिये चार पुरुषार्थों में धर्म को सर्वप्रथम स्थान दिया गया है। अर्थ, काम और मोक्ष तक पहुँचने हेतु यह प्रथम चरण है। हमारे भीतर सद्गुणों का विकास, अपने कर्तव्यों का बोध, अधिकारों का सम्यकरूपेण उपभोग, जीवन में नैतिक मूल्यों का समावेश, आचरण की पवित्रता, साधनों की शुचिता और साध्य की उच्चता आदि को अपनाने का सम्बन्ध कहीं-न-कहीं धर्म से ही जुड़ता है।

धर्म के सम्बन्ध में मूल बात ऐसे समझी जाये कि एक का सुख दूसरे के दुख का कारण न बने। सही और गलत में से सही पथ का चुनाव धर्म है। जो सही होगा, वह सबके लिये सही होगा। किसी के लिये सही और किसी के लिये गलत नहीं होगा। यदि हमारा कोई कार्य हमारा भला तो करे, पर दूसरों का अहित उससे हो रहा हो, तो वह सही नहीं हो सकता। महाभारत में इसको बहुत स्पष्टता के साथ समझाया गया है-

'श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।'

अर्थात् धर्म का रहस्य सुनो और सुनकर हृदय में धारण करो। क्या रहस्य है? सबसे बड़ा रहस्य यह है अपने को जो प्रतिकूल लगे, वह दूसरों के साथ मत करो। बहुत सीधी सी बात है यह। इसको जिसने जान लिया, उसने धर्म को जान लिया। अपने को पहचान लिया। इसको जिसने जीवन में अपना लिया, उसने धर्म अपना लिया। काश कि संसार में सभी ऐसा ही सोच और कर पाते! तब यह दुनिया कितनी खूबसूरत होती!!

अगर इसके बाद भी धर्म-अधर्म को लेकर कुछ अस्पष्टता रहे तो तुलसीदास को पढ़ लेना चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने महान ग्रन्थ 'रामचरितमानस' में धर्म की अनेकशः परिभाषाएं दी हैं। यहाँ एक ही उद्धृत करने भर का अवकाश है। मानव जीवन के कल्याण के लिए वही अकेली पर्याप्त है। उनके द्वारा कही गयी बहुत सीधी और सरल बात है कि-

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।

मतलब कि परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं है और परपीड़न यानि कि दूसरे को सताने से बड़ा कोई अधर्म नहीं है। अब अगर धर्म की इस परिभाषा को सभी लोग मान लें और अपना लें तो धर्म के नाम पर क्या कलह के लिये कोई स्थान रहेगा? धर्म से किसी को कोई समस्या रह जायेगी? तब आदमी धर्मनिरपेक्ष होने में गौरव का अनुभव करेगा कि धर्म-सापेक्ष होने में?

सच तो यह है कि 'जियो और जीने दो' का सिद्धान्त ही धर्म है। भारतीय शास्त्रों में इस बात को अत्यन्त उत्तम ढँग से कहा गया है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'सर्वभूत हितेरतः', 'वसुधैवकुटुम्बकम्' जैसे उद्घोष आखिर भारतीय संस्कृति की ही थाती हैं।

यह एक बहुत बड़ा विषय है, जिस पर विस्तार से चर्चा यहाँ सम्भव नहीं। धर्म की व्याख्याएं अनेक हैं, अनेक प्रकार की हैं, पर विशेष बात यह कि वे सभी मानवोन्नयन तथा मानव-कल्याण से जुड़ती हैं। भारतीय धर्मों की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि उनमें व्यक्त शिक्षाएं अखिल मानवता के परिप्रेक्ष्य में दी गयी हैं, न कि अपने अनुयाइयों भर के लिये। निरपेक्ष भाव से सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का विचार यहाँ प्रस्तुत किया गया। इसलिये मानव-मात्र तो क्या ही, जीव-मात्र के हित की कामना तक यहाँ के धार्मिक शास्त्रों में दिखायी देती है।

धार्मिक त्योहारों के इस माह में आइए हम अपने त्योहारों के महत्त्व को समझें, उनसे जुड़ें और सोल्लास उत्सव मनाते हुए धर्म के भी सही स्वरूप को समझे, उसे अपनाये और उसका निष्ठापूर्वक पालन करें तो इससे निश्चय ही हमारे लिये लोक और परलोक दोनों में सुख की अनुभूति होगी और हम अपने सदाचरण से दूसरों को भी वैसी ही अनुभूति करा सकेंगे, जैसा कि भगवान बुद्ध 'धम्मपद' में उपदेशना करते हैं-

उत्तिट्ठे न प्पमज्जेय धम्मं सुचरितं चरे।
धम्मचारी सुखं सेति अस्मिं लोके परम्हि च।।
धम्मं चरे सुचरितं न नं दुचचरितं चरे।
धम्मचारी सुखं सेति अस्मिं लोके परम्हि च।।

अर्थात्, उठे। प्रमाद न करे। धर्म का उत्तम आचरण करे। धर्मचारी इस लोक में तथा परलोक में सुख की नींद सोता है। धर्म का आचरण निष्ठा से करे। शिथिलता से न करे। धर्मचारी इस लोक में तथा परलोक में सुख की नींद सोता है।

सामाजिक उद्यमिता के माध्यम से ग्राम स्वराज्य

- प्रो. सौरभ

बदलते वैश्विक परिवेश में, विशेषतः कोविड महामारी के पश्चात, एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लगातार अस्थिरता के परिप्रेक्ष्य में भारत में सामाजिक और आर्थिक संपर्क के अपने संरचनात्मक स्वरूप पर फिर से विचार करने का एक राष्ट्रीय अवसर पैदा किया है। उभरते हुए परिदृश्य ने 'संपूर्ण स्वराज्य' को प्राप्त करने के संकल्प को मजबूत किया है जो 'पूर्ण स्वराज्य' की अवधारणा से एक कदम आगे है। 'संपूर्ण स्वराज्य' में राष्ट्रीय सीमा के भीतर संसाधनों के प्रति आत्मविश्वास और सम्मान शामिल है। 'संपूर्ण' अपने शाब्दिक अर्थ में पूर्णता को समेटे हुए है और राष्ट्र से जुड़े सभी लोगों के व्यापक विकास का आह्वान करता है।

'स्वराज्य' एक वैदिक शब्द है, जिसका अर्थ है-'स्व-शासन' और 'आत्म-संयम', जिसे शुरू में महर्षि दयानंद सरस्वती और बाद में श्री लोकमान्य तिलक द्वारा 'होम-रूल' के पर्याय के रूप में पेश किया गया था और उसके बाद महात्मा गांधी ने इसे विदेशी प्रभुत्व से भारतीय स्वतंत्रता की अवधारणा के रूप में अवधारणाबद्ध कर और लोकप्रिय बनाया। महात्मा गांधी ने 'ग्राम स्वराज्य' का आह्वान किया। उन्होंने विकेंद्रीकरण की वकालत की और सलाह दी कि गाँवों को आर्थिक नीति और विकास योजना का केंद्र बिंदु होना चाहिए। इसके अलावा, 'ग्राम स्वराज्य' के लिए ग्राम गणराज्यों को समानांतर राजनीति की संस्थाओं के साथ-साथ आर्थिक स्वायत्तता की इकाइयों के रूप में संस्थागत बनाने की आवश्यकता थी। स्थानीय स्तर पर कृषि और औद्योगिक क्षेत्र के विकास के लिए संसाधनों की पहचान करने, उन्हें स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवस्थित करने और राज्य और उसके बाद राष्ट्र की समृद्धि में योगदान करने की अवधारणा ही 'ग्राम स्वराज्य' का सार है। महात्मा गांधी के अनुसार, "एक आदर्श भारतीय गाँव ऐसा बनाया जाएगा जो पूरी तरह से साफ-सफाई के लिए उपयुक्त हो। इसमें पर्याप्त रोशनी और हवादार कमरे होंगे जो गाँव के पाँच मील के दायरे में मिलने वाली सामग्री से बने होंगे। घरों में आँगन होंगे जिससे घरवाले घरेलू इस्तेमाल के लिए सब्जियाँ उगा सकें और अपने मवेशियों को रख सकें। गाँव की गलियाँ और सड़कें सभी तरह की धूल से मुक्त होंगी। इसमें जरूरत के हिसाब से कुएँ होंगे जो सभी के लिए सुलभ होंगे। इसमें सभी के लिए पूजा स्थल होंगे, साथ ही एक आम मीटिंग की जगह, मवेशियों को चराने के लिए गाँव का एक साझा स्थान, एक सहकारी डेयरी, प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल होंगे जहाँ औद्योगिक शिक्षा मुख्य होगी, और इसमें विवादों को सुलझाने के लिए पंचायतें होंगी। यह अपना अनाज, सब्जियाँ और फल, और अपनी खादी का उत्पादन करेगा। यह मोटे तौर पर एक मॉडल गाँव के बारे में मेरा विचार है... मुझे विश्वास है कि गाँव वाले, समझदारी भरे मार्गदर्शन में, व्यक्तिगत आय से अलग गाँव की आय को दोगुना कर सकते हैं। हमारे गाँवों में अथाह संसाधन हैं, हर मामले में व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए नहीं, बल्कि निश्चित रूप से लगभग हर मामले में स्थानीय उद्देश्यों के लिए। सबसे बड़ी त्रासदी गाँव वालों की अपनी स्थिति सुधारने की निराशाजनक अनिच्छा है।"

सतत विकास के लिए गांधीवादी आदर्श व्यक्तिगत स्तर पर 'स्वराज', गाँव स्तर पर 'ग्राम सभा' और वैश्विक स्तर पर 'सर्वोदय' में निहित है। भारत सरकार ने 'पंचायती राज' संस्था शुरू की, लेकिन संस्थागतकरण के लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँच पाए हैं। बेहतर रोजगार के अवसरों और सुविधाओं की तलाश में श्रमिकों का पलायन कई राज्यों में स्पष्ट दिखता है। टेक्नोलॉजी और इंटरकनेक्शन ने गांवों में जीवनशैली में बदलाव लाने में भूमिका निभाई है, लेकिन देश के सबसे दूरदराज के हिस्सों में सतत विकास के फायदे पहुंचाने के मामले में इनका इस्तेमाल अभी बाकी है। अर्थव्यवस्था के विकास की चुनौती के साथ-साथ, भारत के सामने समान विकास और एकीकृत विकास की भी चुनौतियां हैं। शहरों से स्थानीय इलाकों में मजदूरों के हालिया प्रवास वापसी ने न केवल स्थानीय संसाधनों पर दबाव बढ़ाया है, बल्कि स्थानीय स्तर पर अधिकारियों के लिए निवासियों को सम्मानजनक और अच्छे जीवन जीने के साधन प्रदान करने की चुनौती भी खड़ी कर दी। कुल मिलाकर, यह एक ऐसा समय है जब भारत के पास दुनिया के सामने मानवीय गरिमा और मूल्य प्रणालियों और सतत स्थानीय विकास के सिद्धांतों में अपने विश्वास का उदाहरण स्थापित करने का अवसर है।

जब दुनिया भारत के विकास की ओर देख रही है, जो आर्थिक विकास की उम्मीद का एक संभावित आधार हो सकता है, तो समाज के एकीकृत विकास के लिए आवश्यक कदम उठाना जरूरी है। मुख्य चुनौती स्थानीय स्तर पर शिक्षा, स्वास्थ्य, आय और अन्य विकास मापदंडों में असमानताओं को कम करना है। स्थानीय अधिकारियों और निवासियों को खुद वैकल्पिक स्रोत बनाने की जरूरत है। नीति निर्माताओं को स्थानीय और क्षेत्रीय ज्ञान आधार पर ध्यान केंद्रित करते हुए और स्वदेशी ज्ञान को विकास के आधार पर रखते हुए, पुनर्स्थानीकरण के नवीन मॉडल के बारे में सोचना होगा। बल्कि सभी संगठनात्मक और सेवा इकाइयों को एक ऐसी रणनीति परिभाषित करने की तत्काल आवश्यकता है जो राष्ट्र के विकास और वृद्धि के इंजन को एकीकृत और संचालित करे, जिसमें उद्यमी उद्यमों और स्थानीय ज्ञान आधार के प्रभावी उपयोग के साथ पुनर्स्थानीकरण पर ध्यान केंद्रित किया जाए। भारत के विभिन्न हिस्सों में 'सामाजिक उद्यम' लोगों की क्षमता विकसित करने पर काम कर रहे हैं, जिसमें नए उद्यम मॉडल शामिल हैं जो सबसे निचले स्तर पर मानवीय जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। ये हाइब्रिड संगठन हैं जो बाजार आधारित समाधानों के माध्यम से सामाजिक मूल्य बनाने के लिए काम करते हैं और सकारात्मक बाहरी प्रभावों के साथ सामाजिक समस्याओं के लिए स्थायी समाधानों की तलाश में हैं। सामाजिक उद्यम ऐसे संगठन हैं जो सामाजिक विकास के लिए उत्प्रेरक के रूप में व्यवसायों में शामिल हैं और ऐसी प्रक्रिया बनाते हैं जो लोगों और सामाजिक-आर्थिक संस्थानों के बीच संबंधों को लगातार बेहतर बनाती है। इन संस्थानों को गतिशील वातावरण में संसाधनों के न्यायसंगत और इष्टतम उपयोग के साथ गुणात्मक और मात्रात्मक जरूरतों को पूरा करने के बीच संतुलन बनाने पर ध्यान केंद्रित करके विकसित किया जाना है। इम्पैक्ट इन्वेस्टर्स काउंसिल (IIC) की रिपोर्ट के अनुसार, ६०० से अधिक पहचाने गए सामाजिक उद्यमों ने +६ बिलियन से अधिक पूँजी आकर्षित की है और ५०० मिलियन से अधिक लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। सामाजिक उद्यम का प्रभाव दिखाई देने वाले या गिने जाने वाले से कहीं अधिक है। वे समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं। विकास लक्ष्य न केवल सतत विकास लक्ष्यों द्वारा निर्देशित होते हैं बल्कि उन संस्थानों की न्यायसंगत और मानवीय प्रतिक्रियाओं पर भी आधारित होते हैं जहाँ वे प्रत्येक व्यक्ति को विकास का समान और उचित अवसर प्रदान करते हैं। विल्ग्रो, अशोका फाउंडेशन, दृष्टि फाउंडेशन, जूट फॉर लाइफ फाउंडेशन, जयपुर रग्स, सेवा फाउंडेशन और कई अन्य जैसे मान्यता प्राप्त संगठनों की पहलों के सकारात्मक हस्तक्षेप ग्रामस्वराज की विचारधारा के साथ लगातार काम कर रहे हैं, ताकि पृथ्वी पर आजीविका बनाए रखने के लिए समान और मानवीय विकास के अवसर को एकीकृत किया जा सके। ग्रामस्वराज विचारधारा पर आधारित सामाजिक उद्यम गैर-जिम्मेदार खपत के लिए महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं में से एक हैं और स्थानीय ज्ञान आधार के साथ विकास को फिर से परिभाषित कर रहे हैं।

हालांकि, भारत में 'सामाजिक उद्यमों' की भागीदारी की प्रेरणा और गहरी समझ की आवश्यकता है, ताकि वे स्थानीयकरण लक्ष्य को प्राप्त करने और स्वदेशी ज्ञान को अनुकूलित करने और 'संपूर्ण स्वराज्य' प्राप्त करने के लिए एक प्रभावी तंत्र बन सकें। सामाजिक उद्यमों को एक पहचानने योग्य अर्थ प्रदान करने के लिए और अधिक जीवंत चर्चाओं की आवश्यकता है। खादी और ग्राम उद्योग जैसे संस्थानों को सामाजिक उद्यम परिभाषा के अन्तर्गत फिर से परिभाषित करने की आवश्यकता है। ये उद्यम, प्रौद्योगिकी के अभिनव उपयोग और स्थानीय ज्ञान आधार को साधने के साथ साथ, स्थायी और व्यापक व्यवसाय के मॉडल बना सकते हैं, जो समकालीन हों और भारतीय संस्कृति से जुड़े हुए हों। सामाजिक उद्यम स्थानीय ज्ञान आधार को जान कर उनका सदुपयोग कर सकते हैं और भारत की आर्थिक एवं सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत कर सकते हैं। सरकार के नेतृत्व में, प्रौद्योगिकी के अभिनव उपयोग और सही मार्गदर्शन के साथ सामाजिक उद्यम कम उपयोग किए गए संसाधनों को जुटा सकते हैं, सामाजिक पूंजी का निर्माण कर सकते हैं, सामाजिक लाभ ला सकते हैं, और सामाजिक-आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं। स्थानीय एवं ग्राम स्वराज्य ही नवयुवकों को सकारात्मक से सतत विकास में जोड़े जाने के प्रश्नों उत्तर है, जिसका रास्ता स्थानीयकरण है और माध्यम सामाजिक उद्यम है। आइए हम सामाजिक उद्यमिता के नवीन प्रयोगों के साथ अपने भविष्य को उज्ज्वल करें।

प्रबन्ध अध्ययन विभाग
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर सम्मान समारोह

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर में कुलपति प्रो. कविता शाह के निर्देशन में तथा अधिष्ठाता, छात्र कल्याण एवं कला संकाय प्रो. नीता यादव की अध्यक्षता में शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर एक सम्मान समारोह बड़े ही उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ कुलसचिव कार्यालय के कनिष्ठ सहायक श्री विवेक सिंह द्वारा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जीवनी-प्रस्तुति से हुआ। उन्होंने बताया कि डॉ. राधाकृष्णन एक महान शिक्षक, दार्शनिक और भारत के द्वितीय राष्ट्रपति रहे, जिनकी स्मृति में प्रत्येक वर्ष शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर सभी शिक्षकों को उपहार एवं मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। कुलसचिव श्री दीनानाथ यादव ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षक समाज के मार्गदर्शक होते हैं, जो विद्यार्थियों के जीवन को ज्ञान और प्रेरणा से आलोकित करते हैं।

अंत में प्रो. नीता यादव ने सभी शिक्षकों की ओर से कुलपति प्रो. कविता शाह के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्री दुर्गा प्रसाद दुबे ने किया। इस अवसर पर वित्त अधिकारी श्री रमेंद्र कुमार मौर्य सहित सभी शिक्षकगण उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के सहयोग हेतु विशेष कार्यक्रम

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, में अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ एवं मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के सहयोग और संवर्धन हेतु १० सितंबर २०२५ को एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. कविता शाह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अध्ययनरत अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों, विशेषकर नेपाल से आने वाले छात्रों के हितों की रक्षा एवं शैक्षणिक सहयोग के लिए विश्वविद्यालय पूर्णतः प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि भारत और नेपाल के ऐतिहासिक-सांस्कृतिक संबंध गहरे हैं और सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का वातावरण सौहार्दपूर्ण, सुरक्षित एवं अध्ययन के लिए अनुकूल है।

विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. सौरभ ने विद्यार्थियों से कहा कि शैक्षणिक विकास के साथ-साथ मानसिक सुदृढ़ता भी समान रूप से आवश्यक है। मानसिक सुदृढ़ता आत्मविश्वास प्रदान करती है। उन्होंने विद्यार्थियों से संयमित व्यवहार तथा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया।

मुख्य नियंता प्रो. दीपक बाबू ने कहा कि विद्यार्थियों की सुरक्षा और सहयोग विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकता है। काग्रक्रम में कला तथा छात्र-कल्याण अधिष्ठाता प्रो. नीता यादव और विज्ञान अधिष्ठाता प्रो. प्रकृति राय ने भी विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया।

कार्यक्रम का संयोजन डॉ. शिल्पी श्रीवास्तव ने किया और संचालन डॉ.अंकिता श्रीवास्तव ने। इस अवसर पर डॉ. अरुण द्विवेदी, चिकित्सा टीम, शिक्षक-कर्मचारी और अंतर्राष्ट्रीय एवं स्थानीय विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भौतिकी विभाग के डॉ. अमरजीत यादव को १२.८६ लाख की अनुसंधान परियोजना स्वीकृत

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर के भौतिकी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अमरजीत यादव को उनकी अनुसंधान परियोजना "ग्राफीन क्वांटम-धातु ऑक्साइड नैनोकॉम्पोजिट्स का सुपरकैपेसिटर्स के क्षेत्र में सैद्धांतिक और प्रयोगात्मक मूल्यांकन" हेतु ₹१२.८६ लाख की धनराशि स्वीकृत हुई है।

डॉ. यादव ने बताया कि यह परियोजना ऊर्जा भंडारण उपकरणों की कार्यक्षमता बढ़ाने तथा स्वच्छ और सतत ऊर्जा समाधान विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देगी। इससे M.Sc. एवं Ph.D. विद्यार्थियों को नैनोप्रौद्योगिकी और मटेरियल साइंस में प्रशिक्षण एवं शोध के अवसर प्राप्त होंगे।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. कविता शाह ने इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि यह न केवल भौतिकी विभाग, बल्कि पूरे विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय है। विज्ञान संकाय की अधिष्ठाता प्रो. प्रकृति राय एवं विभागाध्यक्ष डॉ. कौशलेंद्र चतुर्वेदी ने भी हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि इस परियोजना से विभाग में अनुसंधान की नई दिशाएँ खुलेंगी।

विज्ञान संकाय में दीक्षारंभ कार्यक्रम आयोजित

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु के विज्ञान संकाय में सत्र २०२५-२६ के नवप्रवेशित छात्रों के लिए दीक्षारंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही कुलपति प्रो. कविता शाह ने अपने संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल अकादमिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में कार्य करना है।

उन्होंने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धी युग में छात्रों को शोध, नवाचार, सामाजिक उत्तरदायित्व और व्यावसायिक कौशल से भी परिचित होना चाहिए। कुलपति ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे अवसरों का पूर्ण उपयोग करें और अपने ज्ञान व कौशल को समाज तथा राष्ट्र के विकास में योगदान के रूप में प्रस्तुत करें।

कार्यक्रम में प्रो. नीता यादव, प्रो. प्रकृति राय, श्री दीनानाथ यादव, प्रो. सौरभ, डॉ. कौशलेन्द्र चतुर्वेदी, डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह, तथा संकाय के अन्य शिक्षक और छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रक्षा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. एस. के. श्रीवास्तव द्वारा दिया गया।

भारतीय पारंपरिक ज्ञान : एक जीवन शैली

-डॉ. रक्षा

पारंपरिक ज्ञान समाज और संस्कृति की आत्मा है। यह रीति-रिवाजों या परंपराओं के माध्यम से प्रकट होता है। पारंपरिक ज्ञान स्थानीय लोगों की भाषा, कला, स्वास्थ्य, समाज, सांस्कृतिक प्रथाओं, वास्तुकला, जैविक विविधता, जीवन शैली आदि में परिलक्षित होता है। भारत में विविधता भूगोल, इतिहास, प्रकृति, संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाज और मूल्यों तक में परिलक्षित होती है। लेकिन भारतीय पारंपरिक ज्ञान नए विकास और उन्नति का स्रोत और प्रेरणा है। प्राचीन भारत में आयुर्वेद, वास्तुकला, खगोल विज्ञान, वस्त्र, शिक्षा आदि कई क्षेत्रों में आविष्कार और खोजें हुई हैं। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने दुनिया को कई अवधारणाएँ दी हैं।

प्राचीन भारतीय शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली बच्चों को बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, सामाजिकता, आध्यात्मिक विकास और व्यावहारिक जीवन कौशल का प्रशिक्षण देने की एक महत्वपूर्ण संरचना रही है। तक्षशिला और नालंदा ने विभिन्न विद्वानों को ज्ञान की खोज और अन्वेषण के लिए आकर्षित किया है। यह भारतीय पारंपरिक ज्ञान (शिक्षा) प्रणाली का सर्वोत्तम उदाहरण है। यह आज भी शिक्षकों, सृजनकर्ताओं या नवाचारों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। भारतीय वास्तुकला भी पारंपरिक ज्ञान प्रणाली का एक अद्भुत उदाहरण है। लेपाक्षी मंदिर का हैंगिंग पिलर (लटकता हुआ स्तंभ) वास्तुकला के पीछे के विज्ञान को दर्शाता है। कैलाश मंदिर, हवा महल और कोणार्क सूर्य मंदिर ऐसे ही कुछ नाम हैं जो भारतीय पारंपरिक स्थापत्य ज्ञान के महत्त्व और वैशिष्ट्य को व्यक्त करते हैं।

भारतीय स्वास्थ्य और चिकित्सा का क्षेत्र भी असाधारण है। पहले लोगों का इलाज आयुर्वेद के नियमों के अनुसार किया जाता था। यह शरीर, मन और आत्मा के संतुलन के सिद्धांत पर आधारित एक समग्र उपचार प्रणाली है। इस उपचार में विभिन्न जड़ी-बूटियों और प्राकृतिक तकनीकों के साथ-साथ योग और ध्यान का समावेश होता है। यह न केवल प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा देता है, बल्कि पर्यावरण की भी रक्षा करता है। पारंपरिक भारतीय पद्धति में धातु विज्ञान का क्षेत्र भी अन्य सभ्यताओं के लिए प्रेरणादायी रहा है। धातु विज्ञान का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण दिल्ली का लौह स्तंभ है, जो लोहे से बना है, फिर भी इसमें जंग या क्षति के बहुत कम निशान हैं। समृद्ध रंगीन भारतीय वस्त्र निर्माण पारंपरिक ज्ञान के क्षेत्रों में से एक है, जो फैशन डिजाइनरों को नवाचार और प्रयोग करने के लिए प्रेरित करता है। वस्त्र के क्षेत्र में भारत का प्राचीन ज्ञान कपड़े या रेशों को रंगने के लिए प्राकृतिक रंगों का उपयोग करता है, कपड़े पर एकीकृत डिजाइन बनाता है और कपड़े को लंबे समय तक उपयोग के लिए अधिक टिकाऊ बनाता है।

भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली ने जीवन के सभी क्षेत्रों को छुआ है, लेकिन आजकल कई कारणों से युवा पीढ़ी में इसका महत्व कम होता जा रहा है। पारंपरिक ज्ञान के मूल्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, बल्कि आधुनिक तकनीक का उपयोग करना भी महत्वपूर्ण है। पारंपरिक ज्ञान के मिश्रण के साथ नवाचार न केवल जीवित रहने के लिए बल्कि संतुलन और स्वस्थ जीवन के लिए युवा और भावी पीढ़ी में मूल्य, संस्कृति, भावना की भावना भी पैदा करता है।

-सहायक आचार्य,
गृह विज्ञान विभाग

दीप मेरे जल

महादेवी वर्मा

दीप मेरे जल अकम्पित
घुल अचंचल !

सिन्धु का उच्छ्वास घन है,
तड़ित्, तम का विकल मन है,
भीति क्या नभ है व्यथा का
आँसुओं से सिक्त अंचल !

स्वर प्रकम्पित कर दिशाएँ,
मोड़ सब भू की शिराएँ,
गा रहे आँधी-प्रलय
तेरे लिये ही आज मंगल !

मोह क्या निशि के वरों का,
शलभ के झुलसे परों का,
साथ अक्षय ज्वाल का
तू ले चला अनमोल सम्बल !

पथ न भूले, एक पग भी,
घर न खोये, लघु विहग भी,
स्निग्ध लौ की तूलिका से
आँक सबको छाँह उज्ज्वल !

हो लिये सब साथ अपने,
मृदुल आहटहीन सपने,
तू इन्हें पाथेय बिन, चिर
प्यास के मरु में न खो, चल!

धूम में अब बोलना क्या,
क्षार में अब तोलना क्या !
प्रात हँस रोकर गिनेगा,
स्वर्ण कितने हो चुके पल !
दीप रे तू गल अकम्पित,
चल अचंचल !

ग़ज़ल

-फ़ज़लुर्रहमान सहर महमूद (नेपाल)

इतने क़लील वक्त में कितना बदल गया।
जानाँ तुम्हारे शहर का नक़्शा बदल गया।

उसका पता मैं ढूँढ़ रहा हूँ गली-गली,
मंज़िल बदल गई है कि रस्ता बदल गया।

आंखों में मैने अश्क छुपा तो लिए मगर,
रुख़सत के वक्त मेरा जो लहजा बदल गया।

क्या जाने याद आ गया क्या दफ़अतन उसे,
मुझ पर निगाह पड़ते ही चेहरा बदल गया।

कहता है खुद ज़माना कि बदले हुए हैं लोग,
लोगों का है ख़याल ज़माना बदल गया।

मंज़र बदलते देखे हैं आंखों ने यूँ सहर,
अब याद भी नहीं है कि क्या क्या बदल गया।

पूर्व छात्र एम. ए. उर्दू (२०२४)

वक्त का यह परिंदा

अजय अंजान

वक्त का यह परिंदा उड़ता गया
नीले अम्बर में यूँ ही मचलता गया
हम रहे आशियाना बनाने में गुम
जिन्दगी के वो पल-पल को छलता गया
वक्त का यह परिंदा...

आये धरती पे हम यूँ ही रोते हुए
पाया लोगों को हा! देखो हँसते हुए
ख्वाहिशें सबकी पूरी करूँ किस कदर
इस भ्रमर-वन में यूँ ही भटकता गया
वक्त का यह परिंदा...

क्या पाया है मैंने हाँ क्या खो दिया
ये न सोचा कि मैंने ये क्या बो दिया
कर्म का फल मिलेगा कभी न कभी
सोचकर ही यही पल ठहरता गया
वक्त का यह परिंदा...

रंजोगम जिन्दगी के भुला कर के मैं
बागे गुलशन लहू से सजा कर के मैं
आयेंगे दिन मेरे भी कभी न कभी
बन पथिक मैं तो यूँ ही हाँ चलता गया
वक्त का यह परिंदा...

अजय अंजान राहों पे यूँ चल दिए
बागे गुलशन सजाने की ख्वाहिश लिए
आयेंगे दिन मेरे भी कभी न कभी
बन पथिक मैं तो यूँ ही हाँ चलता गया
वक्त का यह परिंदा...

पूर्व छात्र, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु

अपराजिता

प्रवीण कुमार मद्धेशिया

नीले आकाश की मोहक छाया,
धरती की गोद में जीवन पाया।
धूप में तपे, वर्षा में खिले,
हर कठिनाई में मुस्कान मिले।

अपराजिता- नाम ही संकेत,
जो कभी न झुके, न रोके रुके।
दीवारों पर चढ़कर नभ को छूती,
संघर्ष में भी सादगी ओढ़ती।

पक्षी रुकें उसकी छाँव तले,
शीतलता दे जो पास चले।
वह बताती है हर बार यही,
हार नहीं है, सिर्फ ठहराव सही।

नीले फूलों में वाणी छिपी,
धरती को कहती "मैं अब भी जीवित।"
अपराजिता का यह सन्देश अनोखा,
धैर्य ही जीवन का सच्चा राग चोखा।

पूर्व छात्र,
जैव प्रौद्योगिकी विभाग (2021–2023)

लड़ाका

(लोककथा)

एक गाँव में एक लड़ाका स्त्री रहती थी। जिस दिन से वह ब्याहकर गाँव में आयी, उसने गाँव–भर के लोगों की नाक में दम कर दिया। न बूढ़ा देखे न जबान, न स्त्री देखे न पुरुष, न बच्चा देखे, न मेहमान– जो भी सामने पड़ जाये, भरपेट गालियाँ खिलाकर उसका स्वागत करे। गाँव के बाहर की ओर उसका घर। हरेक को उधर से ही निकलना। कोई किसी काम से जा रहा है, कोई बच्चा पढ़ने जा रहा है, कोई अपने मेहमान को विदा करने जा रहा है, कोई किसी शुभ काम के लिए निकल रहा है – मतलब कि किसी का लिहाज न नहीं, न वक्त का कोई संकोच न छोटे–बड़े का कोई अर्थ। जो सामने पड़ जाये, बस उसे पानी–पानी कर देना। लड़ाका स्त्रियाँ तो और भी गाँव में थीं, पर उसके सामने सब पनाह माँग गयीं। तब बहुत परेशान गाँववालों ने मिलकर एक युक्ति निकाली और उस लड़ाका से एक समझौता किया। समझौते के अनुसार वह कभी भी और किसी को भी गाली नहीं देगी, बल्कि घर–घर जाकर लड़ाई करेगी। इसके लिये एक नियम तय हो गया कि वह एक दिन में एक ही घर में झगड़ा करेगी और इसके लिये गाँव–भर के समस्त घरों की क्रमशः बारी तय कर दी गयी। जिस घर की जिस दिन बारी आयेगी, उस घर की महिलाएं उस लड़ाका से मोर्चा लेंगी, यह निश्चित हो गया और इसका पालन भी होने लगा। इस तरह गाँव की स्थिति कुछ ठीक हुई।

एक दिन ऐसा आया कि जिस घर में लड़ाका की बारी थी, उस घर में लड़के का नया–नया विवाह हुआ और घर में नयी बहू आयी। बहू को आये पहला–दूसरा ही दिन और उधर घर में लड़ाका से मुकाबले की बारी। सास बड़ी सहमी–सहमी सी घूमे। बहू ने ताड़ लिया। सास से पूछा– 'अम्मा क्या बात है? कुछ परेशान सी दिख रही हो।' स ास ने कहा–कुछ नहीं, कुछ नहीं बहू।' थोड़ा और समय बीता। जैसे–जैसे लड़ने हेतु लड़ाका के आने का समय निकट आता जाये, सास का तनाव बढ़ता जाये। अन्ततः फिर बहू ने कहा कि 'अम्मा, बताती क्यों नहीं? कुछ तो बात है। अब हम इस घर की बहू हैं। इस घर का सुख–दुख हमारा भी है। अपनी बेटी की ही तरह हमें समझो और बताओ। हो सकता है हम कुछ काम आ जायें।' सास ने भी सोचा कि अब तो थोड़ी देर में इसे खुद ही पता चल जायेगा। कहाँ तक छिपाया जायेगा। बता ही दें। उसने कहा– 'बहू क्या बतायें, मन बड़ी दुविधा में है। अब तो कुछ देर में जो होने वाला है, वह तेरे सामने आ ही जायेगा। आखिर कब तक तुझसे यह बात छिपी रहेगी। यही मेरी परेशानी का कारण है। बात असल में यह है कि इस गाँव में एक भारी लड़ाका स्त्री है। उसकी गाँव में हर घर से लड़ने की बारी बँधी हुई है। आज हमारे घर का नम्बर है। वह बस कुछ देर में आती ही होगी।' बहू ने कहा– 'बस, इतनी सी बात! इसके लिये परेशान हो तुम अम्मा!' सास ने कहा– 'हाँ बहू। मैं परेशान इसलिये हूँ कि अगर मैं उस लड़ाका से कुछ न कहूँगी तो तुझे लगेगा कि मेरी सास तो बड़ी कायर है, कमजोर है। अगर कुछ कहूँगी तो तू समझेगी कि अरे मेरी सास तो बड़ी खराब है। ऐसी ऐसी गालियाँ बकती है। अब मुझे जबाब में कुछ तो बोलना ही पड़ेगा।'

बहू ने कहा– 'घबराओ नहीं अम्मा। आज की लड़ाई तुम मुझ पर छोड़ दो। मैं निपट लूँगी।' सास ने कहा– 'क्या कह रही है बहू तू?' बहू ने कहा– 'हाँ अम्मा, मैं!' सास बोली– 'पूरे गाँव में बदनामी हो जायेगी। तू उसे जानती नहीं है। कोई आज तक उससे जीत नहीं पाया है। जीत तो तू भी उससे नहीं पायेगी। बस गाँव भर में तेरी और मेरी किरकिरी और हो जायेगी।' बहू ने कहा– 'अरे अम्मा की बातें। तुम चिन्ता न करो। मैंने अपने गाँव में ऐसे जाने कितने किस्से निपटाये हैं। आज वह तुम्हारी बहू से जीतकर नहीं जा पायेगी। हारकर जायेगी। तुम देखो तो।' जब बहू ने उससे इतना कहा तो सास को अन्दर से कुछ खुशी हुई कि अगर सचमुच इसने उस लड़ाका को हरा दिया तो यह तो बहुत बड़ी बात हो जायेगी। परन्तु मन में शंका भी थी। लड़ाका आखिर दिग्विजयी थी और उसकी बहू एकदम नयी योद्धा। सो उसने बहू को समझाने की कोशिश की, लेकिन बहू ने ही उसे उल्टा समझा दिया और एक शर्त सास के सामने रख दी। बहू ने कहा, 'अम्मा, देखो एक बात है। मेरी और उस लड़ाका की लड़ाई में तुम बिल्कुल बोलोगी नहीं। मैं अकेले ही निपटूँगी। चाहे कुछ भी हो, तुम सामने आना मत।' सास इस पर सहमत हो गयी और निश्चिन्त होकर लड़ाका का इन्तजार करने लगी। इतने में लड़ाका दरवाजे पर आ गयी।

लड़ाका ने आते ही अपनी परम्परा के अनुसार घर के सभी सदस्यों को सभी तरह की गालियाँ देनी शुरू कर दीं। वह गालियाँ देती रही, बहू कुछ बाली ही नहीं। सास को सन्देह हुआ कि बहू शायद डर गयी। गालियाँ उससे बरदाश्त नहीं हो रही थीं। वह कसमसायी और दरवाजे की तरफ चली। बहू ने रोक दिया। कहा– 'अम्मा! हमारा तुमसे तय हुआ है, तुम कुछ बोलोगी नहीं। जो कुछ करेंगे, हम करेंगे।' सास वचनबद्ध थी, सो बेमन से उसे रुकना पड़ा। लड़ाका गालियाँ देती रही, देती रही। कोई जबाब न मिला तो इससे खिसियाकर और खराब–खराब गालियाँ दीं। कोई जबाब न मिलना उसे अपना अपमान सा लग रहा था। आखिर एकतरफा कितनी गालियाँ देती। घण्टा भर तक अकेले गालियों की बौछार करते–करते कुछ थकने सी लगी। इधर सास की समझ में कुछ न आये। बहू खुद भी कोई उत्तर नहीं दे रही थी और सास को भी कुछ नहीं करने दे रही थी। वह कई बार कसमसाई, परन्तु वचन का हवाला देकर बहू ने हर बार रोक दिया।

जब लड़ाका कुछ थकने–सी लगी तो उसका स्वर मन्द पड़ने लगा, गालियों की रफ्तार थोड़ी धीमी हो चली। आखिर जब यह लगने लगा कि वह अब शायद वापस चली जायेगी, तब बहू निकली और दरवाजे की तरफ आकर घूँघट काढ़े–काढ़े ही उसने अपना अँगूठा उसे चिढ़ाने के अन्दाज में दिखाया और वापस घर में चली गयी। इस पर तो लड़ाका और चिढ़ गयी। उसने और भी जोश के साथ गालियाँ देनी शुरू कर दीं। एकाध घण्टे तक फिर गरियाती रही। अन्ततः थककर फिर जब उसकी रफ्तार कम हुई तो बहू फिर उसी तरह से चिढ़ाकर चली गयी। ऐसा कई बार हुआ। इस तरह बहू ने लड़ाका की सारी ताकत निचोड़ ली। उसे पूरी तरह से पस्त कर दिया। एक समय ऐसा आया कि लड़ाका की हालत ऐसी हो गयी कि उसे जाफ आ गया और वह चक्कर खाकर गिर गयी। अचेत हो गयी। अब बहू आयी, पानी और पंखा लेकर। भरी दोपहरी का समय था। बहू ने अपनी गोद में उसका सिर रखा पानी के छींटे उसके ऊपर मारे और पंखा झलने लगी। सास की कुछ समझ में न आये कि बहू आखिर यह कर क्या रही है। जिसने हर तरह की गालियाँ दीं, उसी को होश में लाने की कोशिश कर रही है, उसकी सेवा कर रही है। मर रही है तो मरने दे, गाँव को इससे छुटकारा तो मिले। सबकी नाक में दम कर रखा है। लेकिन कर क्या सकती थी। वचन से बँधी हुई थी।

किसी तरह पानी छिड़ककर, मुँह में पानी डालकर और पंखा झलकर बहू लड़ाका को होश में लायी। जब वह कुछ चैतन्य हुई और उसने देखा कि वह अब तक जिसको पानी पी–पीकर कोस रही थी, हर तरह की गालियाँ जिसको उसके खानदान सहित उसने दे डालीं थीं, जिन्दा तो जिन्दा, उसकी सात पुश्तों तक के मरे हुए परिजनों को भी उसने अपनी गालियों न जाने कितनी बार दोबारा–दोबारा मार डाला था– वह उसकी ऐसी सेवा कर रही है। कुछ भी सही, आखिर थी तो इंसान ही। उधर बहू ने मुस्कराकर उसका हाल पूछा– 'अम्मा अब ठीक हो?' प्रत्युत्तर में लड़ाका की आँखों में आँसू आ गये। बहू ने उसका सिर सहलाते हुए कहा– 'अम्मा, कोई बात नहीं है, तुम एकदम ठीक हो। उठो और लड़ो!' लड़ाका द्रवित हो उठी, उसने हाथ जोड़े। बोली– 'बहू में तुझसे हार गयी। आज तक इस गाँव में मुझे कोई हरा नहीं पाया, लेकिन तूने हरा दिया। अब मैं तुझसे कभी नहीं लड़ूँगी, तुझसे क्या, तेरे घर में भी किसी से नहीं लड़ूँगी। आज से तू मेरी बेटी जैसी।' बहू ने कहा– 'पक्का अम्मा! अगर म तुम्हारी बेटी जैसी हूँ, तो अपनी इस बेटी को आज एक वचन दो।' लड़ाका ने कहा– 'माँग बेटी, तू जो कहेगी, मेरे बस में रहा तो जरूर पूरा करूँगी।' बहू ने कहा– 'तुम्हारे बस में है अम्मा। यह तुम्हारे ही बस में है। अपनी इस बेटी को वचन दो अम्मा कि तुम आज के बाद मुझसे ही नहीं, गाँव में भी किसी से नहीं लड़ोगी।'

लड़ाका ने भावविह्वल होते हुए कहा– 'मैं तेरी गुलाम बन गयी बेटी। तूने मुझे नयी जिन्दगी दी है। गुरु–ज्ञान भी दिया है। तू जो कहेगी, मानूँगी। मैंने प्रतिज्ञा की। चाहे कुछ भी हो जाये, आज से किसी से नहीं लड़ूँगी।'

बहू ने कहा– 'नहीं, आप मेरी माँ समान हैं। आपने बेटी की बात रख ली, मैं आपकी अहसानमन्द हूँ। कभी भी कोई जरूरत होने पर तुम्हारी यह बेटी तुम्हारे लिये हाजिर होगी अम्मा।''

दोनों गले मिलीं। बहू ने लड़ाका के पैर छुए और लड़ाका बहू को आशीर्वाद देती हुई अपने घर चली गयी। और, इस तरह उस दिन के बाद से पूरे गाँव को उस लड़ाका के भय से मुक्ति मिल गयी।

(प्रस्तुति–हरीशकुमार शर्मा)

दशहरा का संकल्प

दशहरा आ गया, आओ! सभी संकल्प कर लें।
बुराई पर भलाई की, विजय को याद कर लें।
निकालेंगे सभी दुर्गुण, मिटाकर तमस अन्तस का,
चलेंगे सत्य-शुभ पथ पर, हृदय में भाव भर लें।

बुद्ध-वचन

मल्लिका साधारण कुल की कन्या थी, पर अपने गुणों से कोसलराज प्रसेनजित् की बड़ी प्रिय रानी हो गयी। एक बार राजा ऊपर महल पर था; उसने देवी से कहा- "मल्लिके, तुझे क्या कोई अपने से भी अधिक प्रिय है?" "मुझे अपने से बढ़कर कोई प्रिय नहीं है।" राजा ने बुद्ध के पास जाकर यही बात कही। उन्होंने गाथा कही-

सभी दिशाओं में अपने मन को दौड़ा,
कहीं भी अपने से प्यारा कोई दूसरा न मिला;
वैसे ही, दूसरों को भी अपना बड़ा प्यारा है,
इसलिये, अपनी भलाई चाहने वाला दूसरे को मत सतावे।

(मल्लिकासुत्त; उ. प्र. हिन्दी संस्थान से प्रकाशित राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'पालि साहित्य का इतिहास' से साभार)